जवाहर कृषि संदेश

वर्ष : 8 अंक :15 &16 कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर अप्रैल - सितम्बर 2015

विशेष कृषि संदेश ...

मृदा परीक्षण

मृदा परीक्षण एक रासायनिक प्रक्रिया है जिसमें मृदा के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति का निर्धारण किया जाता है, इस विधि से फसल बोने से पूर्व ही पोषक तत्वों की आवश्यक मात्रा ज्ञात हो जाती है। ताकि आवश्यक उर्वरकों की पूर्ति समयानुसार की जा सके।

मृदा परीक्षण के उद्देश्य

- मृदा में पोषक तत्वों की सही मात्रा ज्ञात करना तथा उसके आधार पर संतुलित उर्वरकों का उपयोग करना।
- मृदा की विशिष्ट दशाओं का निर्धारण करना जिससे मृदा को कृषि विधियों और मृदा सुधारक पदार्थों की सहायता से सुधारा जा सके।

मिट्टी की जॉच कब करायें

मिट्टी की जांच कराने के लिए सर्वोत्तम समय गेहूँ की कटाई के उपरांत मई एवं जून का महीना उपयुक्त होता है, इसके अलावा वर्षा ऋतु के उपरान्त अक्टूबर व नवम्बर माह में भी मृदा परीक्षण कराया जा सकता है। मृदा नमूना एकत्र कर कृषि विज्ञान केन्द्र अथवा मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में ले जा कर मुख्य पोषक तत्व एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों की अलग-अलग जाँच करानी चाहिए।

मृदा नमूनें के साथ भेजी जाने वाली सूचनायें:

- कृषक का नाम व पूरा पता
- आधार नम्बर
- नमूना एकत्र किये गये खेत का नाम / खसरा नं.
- नमूना लेने की गहराई
- बोई गई पिछली फसल का ब्यौरा
- भविष्य में बोई जाने वाली फसलों के नाम
- सिंचाई के साधन
- अन्य समस्या यदि कोई हो
- नमूना एकत्र करने की तिथि

मृदा नमूना लेते समय ध्यान देने योग्य बातें

- गीली मिट्टी से मृदा नमूना नहीं लेना चाहिए
- खेत में अधिक ऊंची व अधिक नीची जगह से नमूना नहीं लेना चाहिए
- पुरानी मेड़, कम्पोष्ट के गढ़ढे तथा खाद डाले गये स्थान से नमूना न लें।
- पेड़ तथा सड़क के किनारे व नाली के पास से नमूना नहीं लेना चाहिए
- मृदा की किस्म भिन्न हो या फसल में कोई रोग हो तो मृदा के नमूने अलग-अलग एकत्रित करने चाहिए ।
- खड़ी फसल से नमूना न लें।
- फसल के बुवाई के लगभग एक से डेढ़ माह पूर्व ही मृदा नमूने परीक्षण हेतु प्रयोगशाला में भेज देना चाहिए ।

सफल प्रयास ...

जबलपुर के माननीय सांसद श्री राकेश सिंह द्वारा गोद लिया गया ''सासंद आदर्श ग्राम कोहला'' के कृषक/कृषक महिला एवं नवयुवकों हेतु खेती को लाभ का धन्धा बनाने एवं उन्नत तकनीक एवं पद्धति से खेती-बाड़ी करने के तरीके सिखाने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा गांव को चयनित कर वैज्ञानिकों के कुशल नेतृत्व में पी.आर.ए. सर्वे का आयोजन किया गया, मिट्टी की दशा एवं खेती की पद्धति आदि में आने वाले समस्याओं का आंकलन करके विशेष कार्य योजना तैयार की गई। जिसके तहत राम तिल उत्पादन हेतु उन्नत प्रजाति टी.के.जी.-55 एवं जे.एन.सी.-6 का प्रदर्शन 80 हे. क्षेत्रफल में कुल 200 किसानों के प्रक्षेत्र पर डाला गया तथा विधि प्रदर्शन के माध्यम से बोने की विधि एवं पोषक तत्व प्रबंधन की जानकारी दी गई। मक्का उत्पादन हेतु 2 हे. क्षेत्र में शंकर मक्का की बोनी उचित बीज दर एवं बोनी की उन्नत तकनीक को बताते हुए नवीन डिवलर से 20 किसानों के प्रक्षेत्र पर किया गया। फसलों के साथ ही सब्जी की उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन कृषक प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे खरीफ प्याज की उन्नत प्रजाति ''एग्री फाउण्ड डाकरेड'' 0.5 हे. क्षेत्र में 5 किसानों के यहां प्रदर्शित किया गया। इसी तरह किचिन गार्डन के तहत विभिन्न प्रजातियों की सब्जी में बैगन (जे.बी.-15) मिर्च (एन. 1101) चौलाई भाजी, (सुमन) पालक (आलग्रीन), करेला (मोनिका), लौकी (गनेश) तथा गिलकी (एन.एस. 44-1) के 100-100 पौधों का रोपण कराया गया/तथा फ्लदार पौधों में आम की उन्नत प्रजाती आम्र पाली के 30 पौधों, अमरूद इलाहाबाद सफेदा के 40 पौधे एवं नीबू की प्रजाति ''कागजी लाइम के 30 पौधों का रोपण कराया गया। साथ ही कृषक एवं कृषक महिलाओं में तकनीकी दक्षता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन का आयोजन भी किया गया। गांव के संसाधन को जानने एवं गाँव की स्थिति का अनुभव प्राप्त करने हेतु कृषि महाविद्यालय, जबलपुर के कृषि वानिकी के छात्रों को 'वानिकी कार्य अनुभव' (फावे) कार्यक्रम के तहत एक माह का गांव में रखा गया। जिससे ग्रामीणों की समस्याओं एवं उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी प्राप्त हो सके तथा छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान से उनकों लाभान्वित किया जा सके तथा किसानों के लिए योजना बनाने में छात्रों द्वारा एकत्र सूचनाओं के आधार पर कार्य योजना तैयार की जा सकती है।

Krishi Vigyan Kendra, Adhartal, Jabalpur (M.P.), Telefax : 0761-2681626, E-mail : kvkjabalpur@rediffmail.com, Web.:kvkjabalpur.nic.in

उपलब्धियाँ

कृषक प्रक्षेत्र प्रदर्शन

- धान की फसल में जिंक की उपयुक्त मात्रा तथा डालने के समय का प्रभाव देखने हेतु 2 हे. क्षेत्र में प्रदर्शन डाला गया जिससे धान के उत्पादन में 13 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- धान की उन्नत सुगंधित प्रजाति पूसा सुगंधा-4 का प्रदर्शन एस.आर.आई. पद्धति से 5 हे. क्षेत्र में कृषक प्रक्षेत्र पर किया गया जिससे उत्पादन में 28.6 प्रतिशत् की बढ़ोत्तरी हुई।
- तिल की उन्न प्रजाति टी.के.जी.-55 का सम्पूर्ण आदान के साथ 20 हे. क्षेत्र में प्रदर्शक डाला गया जिससे उत्पादन में 20.2 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- रामतिल की उन्नत प्रजाति जे.एन.सी.-6 में सम्पूर्ण आदान के साथ 20 हे. क्षेत्र में प्रदर्शित की गई जिससे उत्पादन में 21.8 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- दलहन उत्पादन में वृद्धि हेतु अरहर प्रजाति टी.जे.टी. 501 का सम्पूर्ण आदान के साथ 6.4 हे. में प्रदर्शन डाला गया जिससे उत्पादन में 24.5 प्रतिशत् की वृद्धि ऑकी गई।
- सोयाबीन के श्रेणीकरण का प्रदर्शन 20 कृषकों के यहाँ प्रदर्शित किया गया तथा यह देखा गया कि परम्परागत पद्धति से ग्रेडिगं करने पर एक घंटे में मात्र 50 किग्रा सोयाबीन की ग्रेडिंग होती है परन्तु स्पाइरल ग्रेडर के उपयोग से प्रति घंटा 220 किग्रा सोयावीन की ग्रेडिंग की जा सकती है।
- फसल अवशेष को गोबर एवं जिवाणुओं का उपयोग कर भूमि में मिलाने से भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि हुई फलस्वरूप उपज में स्थानीय पद्धति से 34.5 कु. प्रति हे. की तुलना में प्रदर्शित तकनीक से 36.8 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।
- खरीफ में टमाटर की फसल से अधिक उत्पादन लेने एवं स्वस्थ पौध नर्सरी तैयार करने हेतु मृदा रहित ''प्रोट्रे नर्सरी'' का उपयोग करने से पौधों की संख्या 59.7 प्रतिशत तक सफलता प्राप्त हुई।
- वर्षा ऋतु में पौध रोपण विधि से धनियाँ की बोनी करने से उत्पादन में 31.5 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अप्रैल - जून 2015		जुलाई - सितम्बर 2015	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
फसल उत्पादन	4	86	3	65
उद्यानिकी	2	40	7	148
कृषि में महिलाओं की भागीदारी	2	46	3	60
कृषि विस्तार	3	68	3	62
पौध रोग विज्ञान	–	–	2	43
मृदा विज्ञान	5	112	3	60
पशुपालन	1	21	2	44
अभियांत्रिकी	3	62	–	–

ग्रामीण युवाओं हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण

कार्यक्रम	जुलाई - सितम्बर 2015		
	संख्या	अवधि	लाभार्थी
महिलाओं के स्वरोजगार हेतु कुशन बनाने का प्रशिक्षण	1	10	30
महिलाओं के स्वरोजगार हेतु हस्त कला पर प्रशिक्षण	1	30	30
नव युकवकों के स्वरोजगार हेतु फलदार पौधों की वनस्पतिक प्रवर्धन तकनीक	1	10	20

सेवा कालीन प्रसार कार्यकर्ता प्रशिक्षण

कार्यक्रम	अप्रैल - जून 2015		जुलाई - सितम्बर 2015	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
मसाला एवं नकदी फसलों की उत्पादन तकनीक	–	–	1	24
आगंनवाडी कार्यकर्ताओं हेतु महिलाओं एवं बच्चों की देखभाल पर प्रशिक्षण	1	20	1	27

अन्य विस्तार गतिविधियां

कार्यक्रम	अप्रैल - जून 2015		जुलाई - सितम्बर 2015	
	संख्या	लाभार्थी	संख्या	लाभार्थी
किसान संगोष्ठी	4	98	2	52
किसान मेला	1	2000	–	–
समूह चर्चा	3	126	4	158
वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्र भ्रमण	18	452	36	880
केन्द्र पर किसानों का भ्रमण	48	1800	62	2700
फिल्म सीडी शो	10	212	8	160
गांव का सर्वे	1	40	–	–
प्रक्षेत्र सलाह सेवा	4	52	10	87
निदानात्मक सर्वे भ्रमण	1	21	2	33
प्रक्षेत्र दिवस	1	62	2	146

उपलब्धियाँ

पाली हाऊस में उद्यानिकी फसलों की उन्नत उत्पादन तकनीक

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा दिनांक 13 अप्रैल 2015 को राष्ट्रीय उद्यानिकी मिशन के तहत पाली हाऊस में उद्यानिकी फसलों की उन्नत उत्पादन तकनीक पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें जबलपुर जिले में पाली हाऊस तकनीक अपनाकर फूल एवं सब्जी का उत्पादन कर रहे। पोली हाऊस ग्रोबर एवं उद्यानिकी विशेषज्ञों के बीच परिसंवाद स्थापित किया गया कार्यक्रम के मुख्य आतिथि जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. व्ही.एस. तोमर विशिष्ट आतिथि डा. अनुपम मिश्रा डारेक्टर अटारी, डा. पी.के. मिश्रा संचालक विस्तार सेवाएँ की उपस्थिति में आयोजित किया गया ताकि पोली हाऊस के माध्यम से उद्यानिकी फसलों को बढ़ावा मिल सके।

ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु डिजाईनर कुशन मेकिंग पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु ''डिजाईनर कुशन बनाने'' का 10 दिवसीय व्यवसायिक प्रशिक्षण का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा किया गया। प्रशिक्षण के दौरान दिनांक 17 से 27 अगस्त 2015 तक विभिन्न प्रकार के कुशन, जैसे ताकिया कुशन, लोड़ कुशन, गद्दी आदि पर डिजाइनर कुशन बनाने के गुर सिखायें गये जिसमें कुल 20 महिलायें एवं नव युवतियों ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु हस्तकला प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा दिनांक 1 से 30 सितम्बर 2015 तक 30 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन ग्रामीण महिलाओं के स्वरोजगार हेतु हाथ से तैयार होने वाले डिजाइनर फ्लावर पाड़, मिट्टी पी.ओ.पी. एवं जूट से बने मैट, गमले व अन्य सजावटी सामग्री तैयार करने के गुर सिखाये गये। जिससे समूह बनाकर महिलायें अपना रोजगार स्थापित कर सके।

फ्लदार पौधों में उन्नत पौध प्रवर्धन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण

ग्रामीण युवाओं के स्वरोजगार हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा फ्लदार पौधों में उन्नत पौध प्रवर्धन तकनीक पर दिनांक 2 से 15 सितम्बर 2015 तक 10 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिससे फ्लदार पौधों आम, अमरूद, आंवला, जामुन आदि की उन्नत पौध नर्सरी तैयार करने के विभिन्न विधियों एवं तकनीकों जैसे कमल बांधना, गूंटी बांधना, एयर लेयरिंग आदि नवीन पद्धतियों के गुर सिखाये गये। ताकि युवाओं द्वारा इस व्यवसाय को अपनाकर स्किल भारत का सपना साकार हो सके।

स्वच्छ भारत अभियान

माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रेरणा से चलाये जा रहे ''स्वच्छ भारत अभियान'' के तहत कृषि विज्ञान केन्द्र, जबलपुर द्वारा विभिन्न स्तरो पर स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का आयोजन, कृषि विज्ञान केन्द्र जबलपुर के प्रांगढ़ एवं अंगीकृत गांवों में किया गया जिसमें वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कृषक व कृषक महिलाओं, ग्रामीण युवाओं तथा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं द्वारा बड़ी संख्या में भाग लेकर साफ-सफाई के कार्य किये गये तथा अपने कार्य के माध्यम से लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया गया।

सामयिक कृषि संदेश

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

- सिंचित अवस्था में चने की बुआई अक्टूबर माह के अंत तक किसान भाई कर दें, बीज जनित रोगों के रोकथाम हेतु व्युटावेक्स 1 ग्राम व ट्राइकोडर्मा 4 ग्राम प्रति किलो की दर से बीज को उपचारित करें।
- दलहनी फसलों की बुवाई के लिए बीज को राइजोबियम, पी.एस.बी. कल्चर से टीकाकरण हेतु 5 ग्राम कल्चर प्रति किलो बीज की दर से उपयोग में लायें। कल्चर से टीकाकरण के पूर्व बीज को फफूँद नाशक दवाओं से उपचारित करें।
- बरानी क्षेत्र में चना व सरसों की बुआई 15 अक्टूबर तक एवं सिंचित क्षेत्र में इस माह के अंत तक पूर्ण कर लें।
- मध्य अक्टूबर के बाद किसान भाई गेहूँ की देशी प्रजातियों की बोनी असिंचित तथा हवेली दशाओं में करें।
- प्याज, टमाटर, बैंगन, फूल एवं पत्तागोभी उत्पादन हेतु (नर्सरी) पौध रोपणी (नर्सरी) तैयार करें। रोपणी हेतु उथली क्यारियाँ बना कर बीज को वाविस्टीन व मेंकोजेब दवा से उपचारित कर तैयार क्यारियों में कतारों में बोनी करें।
- पशुओं के लिये हरा चारा बारसीम, रिजका (लूसर्न) जई आदि कि बुआई करें।

नवम्बर माह के कृषि कार्य

- गेहूँ की सिंचित क्षेत्रों में अधिक उत्पादन देने वाली प्रजातियों (जी.डब्लू-273, एम.पी. 1142) की बोनी करें ।
- गेहूँ की बोनी के 25 से 30 दिनों के बाद निंदाई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें। चौड़ी पत्ती वाले खपतवारों के नियंत्रण हेतु 2, 4-डी, दवा का (500-700 ग्राम/हे.) छिड़काव करें।
- जो किसान भाई बसन्त काल में बैंगन लगाना चाहते हैं, वे फसल की रोपाई करें।
- बरसीम, जई आदि फसलों की सिंचाई करें, जई में पहली सिंचाई बोनी के 20-25 दिन पर करें तथा सिंचाई के बाद नत्रजन उर्वरक का उपयोग करें।
- प्याज की पूसा रेड एवं एग्रीफाउंड लाईट रेड किस्म की बुवाई करें।

दिसम्बर माह के कृषि कार्य

- मटर के बाद खाली खेतों में गेहूँ की पछेती किस्म लोक-1 की बुवाई इस माह के अंतिम पखवाड़े तक कर दें।
- फसलों को पाले से बचाने हेतु सिंचाई करें तथा रात के समय खेत में धुँआ करें।
- गेहूँ की खड़ी फसल में सिफारिश के अनुसार नत्रजन उर्वरक दें प्रथम सिंचाई शीर्ष जड़े (क्राउन रूट) विकसित होने की अवस्था, बोनी के 20 से 25 दिनों में करें एवं दूसरी सिंचाई कृले निकलने की अवस्था में 40 से 45 दिनों में करें। नत्रजन उर्वरक की 1/3 मात्रा खड़ी फसल में सिंचाई के बाद छिड़ककर देना लाभप्रद होगा ।
- चना में फली छेदक कीट के प्रकोप को कम करने के लिए

अन्य गतिविधियाँ

प्रति

बुक-पोस्ट

Fortune Graphics © 2412326

प्रकाशक : डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक
संकलन एवं संपादन : डॉ. दिनेश कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि विस्तार)
संपादन सहयोग : डॉ. मोनी थॉमस, डॉ. एस.बी. अग्रवाल, वाय.एम. शर्मा, डॉ. बी.पी. बिसेन, डॉ. शशी गौर, डॉ. नीलू विश्वकर्मा, डॉ. ऋचा सिंह, डॉ. डी.पी. सिंह, श्रीमती जीजी ऐनी अब्राहम